अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

डॉ.क्षमा शर्मा के कथा-साहित्य में नारी शोषण

शोध निर्देशक
डॉ अमर ज्योति एम ए ,एम फल, पीएच डी
नेट स्नातकोत्तर अनुवाद डप्लोमा
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष स्नातकोत्तर केंद्र उच्च
1 शक्षा और शोध संस्थान

वनिता .एम,
रजिस्टरनंबर:**DR-PHD/17/17**
द क्षण भारत हिंदी प्रचार सभा,
उच्च शक्षा और शोध संस्था ,धारवाड़ ।

डॉ. क्षमा शर्मा आधुनिक युग की ऐसी महिला ले खका है,जिन्होंने स्त्री पर होनेवाले अत्याचारों के साथ,अ धकार की बात को भी कथा-साहित्य के माध्यम से वाणी प्रदान की है। नारी की हर छोटी-सी-छोटी और बडी-सी-बडी बात को सहजता से बाँधकर,पुरुष प्रधान समाज के सम्मुख लाया है।क्षमा जी ने नारी की पीडा,त्रासदी को समझा और उसके अंतर्मन में बैठकर, उसे सहज व्यक्त कया है। जैसे-क्षमा जी लखती है-" स्त्रीयाँ उनकी कठिनायियों के तो कहना ही क्या! उनकी कठनायियाँ तो कसी को दिखती ही नहीं,वे हा शए पर भी नहीं,हमेशा हा शए से बाहर ही रहती आई है"।**1**

डॉ. क्षमा शर्मा जी का साहित्य नारी के प्रति अ भव्यक्त मत,उनके नारी जीवन के चत्रण एवं रेखांकन का स्थल कहा जा सकता है।जहाँ उत्पी डत होने वाली नारियों की आवाज़ को बुलंद कया और साहित्य के केंद्र में नारी के व वध रूपों को लाकर खडा कया।इक्कीसवीं सदी का लडका की 'कुछ बातें' में डॉ. क्षमा शर्मा लखती है- "ज़रा -सी भी आत्म-सम्मान वाली,मज़बूत और अपनी राय को दृढता से रखने वाली औरत कसी को पसंद नहीं आती"। **2** क्यों क वह पुरुषों की गुलाम नहीं रह सकती। उसकी वाणी एवं वश्वास में ताकत आ जाती है। इस लए पुरुष प्रधान समाज,इसके सभी तरह से पर काटकर, अपाहिज बनाकर, अपने कदमों में रहने के लए उसे मोहताज बनादेता है।

इस प्रकार डॉ क्षमा शर्मा ने नारी जीवन की त्रासदी का यथार्थमय एवं संवेदनशील प्रस्तुतीकरण अपनी कथा-साहित्य के नारी पात्रों के जीवन- चत्रण एवं दर्शन को प्रस्तुत करने वाले संवादों में अ भव्यक्त करके निम्नां कत वंदुओं के अंतर्गत वश्ले षत, ववे चत,एवं व्याख्यायित कया गया है।

1.1 महानगर में नारी शोषण

डॉ.क्षमा शर्मा के कथा-साहित्य में नारी के शोषण दर्शाया गया है। नारी कहाँ भी हो गाँव में या शहर में उस पर हर ओर शोषण होते रहते हैं। जब नारी काम के वास्ते महानगरों में आती है,तब

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

उसके बहुत सारे शोषणों का सामना करना पडता है। क्षमा जी के उपन्यास 'मोबाइल' में काम ढूँढकर आई मधु शुक्ला पर सह कर्मचारियों से शो षत होना पडता है।

1.2 कामकाजी नारी पर शोषण

डॉ.क्षमा शर्मा के कथा-साहित्य में नारी पात्र अनेक शोषण का शकार बनते हैं। उनकी उपन्यास 'परछाई अन्नपूर्णा' की नायिका वभा अपने दफ्तर से प्रसवकालीन छु ी के लए अफसर से बातचीत करती है। नारी का प्रसवकालीन छु ी लेना कनूनी हक है। ले कन अकसर लोग इस बात के लए नारी को हैरान करते नज़र आते हैं जैसे -"तुम्हारी एप्लीकेशन तो वापस आ गई। हमारे यहाँ इतनी लंबी छु ी नहीं मल सकती है"।पर उसे अपने छु ी ना देकर एक गर्भवती स्त्री का शोषण कर रहा था उसका बॉस कहता है क "तुम्हारी जितनी अर्नलीव हो, ले सकती हो।

उसने उसे आने वाले बच्चे के बारे में शुभकामनाएँ देते हुए एक मोटा पोथा उसे दिखाया था-"देख लीजिए इसमें ऐसी छु ियों का कोई जिक्र नहीं। वह फर तीन मंजिले चढकर यूनियन के जनरल सेक्रेटरी के पास गई थी। पूर्ण गर्भवती स्त्री भाग-दौड रही है और दूसरे अफसर से भी छु ी की मंजूरी न मलने पर तीन मंजिल चढकर जाती है। यह क्या एक नारी का शोषण नहीं है?

1.3 नारी के प्रति पुरुष की विकृत मानसिकता

डॉ. क्षमा शर्मा के कथा-साहित्य में हमें पुरुषों की वकृत मान सकता को देखते हैं,जिनकी वजह से स्त्री शो षत होती और चैन की जिंदगी जी नहीं पाती। आज का युग वैज्ञानिक तथा तकनिकी युग है। समय बडी द्रुतमति से बदल रहा है। समय के साथ नारी की सोच वचार,जीवन शैली एवं जीवन-दर्शन में भी परिवर्तन हो रहा है। आज की नारी शक्षा से आत्म वश्वास हा सल कर नित-नये क्षेत्रों में अपनी मुहर लगा रही है। पुरुषों से कँधे से कँधा मलाकर ही नहीं बल्कि उससे दो कदम आगे का सफर भी अपनी सक्षमता से पार करती हुई अपनी नई पहचान बना रही है। परंतु हमारी पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था का पुरुष परंपरागत जडता एवं अपने मनो चत दायित्व के प्रति गति हीन होकर, वकृत होता जा रहा है। क्षमा शर्मा ने पुरुष की वकृत मान सकता को अपनी उपन्यासों के माध्यम से व्यक्त की है। वकृत मान सकता वाले व्यक्ति का व्यवहार निरर्थक एवं वश्वास असंगत होता जाता है।

'मोबाइल'उपन्यास में डॉ. क्षमा शर्मा ने दफ्तर में एक साथ कार्यरत मधु शुक्ला एवं उसके साथी वनय और आदित्य के वार्तालाप से पुरुष की मान सकता को अ भव्यक्त कया है। मधु, वनय और आदित्य अच्छे मत्र हैं,परंतु मधु शुक्ला को इन्क्रीमेंट मलता है, तो वनय और आदित्य को ईर्ष्या होती है। यहाँ वनय तथा आदित्य याने पुरुष की वकृत मान सकता को डॉ.क्षमा शर्मा उजागर करती है, जैसे-" वनय ने पत्र पढ़ा और तीखेपन से बोला, 'क्यों तुमने ऐसा क्या कया है जो तुम्हें दो इन्क्रिमेंट और कसी को कुछ नहीं'।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

यहाँ डॉ. क्षमा शर्मा ने सद्ध कया है क मधु और उनके साथी, वनय और आदित्य अच्छे दोस्त भी है और एक दूसरों की मदद करते रहते हैं अपने दोस्त और महिला कर्मचारी मधु के साथ वनय,आदित्य इस प्रकार पेश आते हैं क उनके वचार एवं मन से स्त्री जाती के प्रति वकृतियाँ फूट-फूट कर बरस रही है। मधु को इन्क्रिमेंट वास्तव में उसके अच्छे काम के लए मला था,परन्तु वनय,आदित्य उस पर इस प्रकार टूट पडे क मानो मधु ने अपने चरित्र को गरवी रख दिया हो। मधु अर्थात एक स्त्री काबि लयत, प्रतिभा,कुशलता,हुनर होने से वेतन-वृद्धी की हकदार बनी है। पुरुष भी अपने आपको,कुशल,संपन्न बना सकता है,परंतु उन्होंने लगन से कार्य नहीं कया,सो,वेतन-वृद्धी उन्हें नहीं,मधु को मलती है। पुरुष याने वनय और आदित्य अपने काम में निपुणता नहीं ला सके,इस लए अपनी कमज़ोरियों को छिपाते हुए मधुको लाँछित करते हैं। हमें नहीं,तो कसी और को भी नहीं। स्त्री के कोमल मन पर चरित्र हीनता का आरोप लगाते हुए,उन्हें जरा भी शर्म महसूस नहीं होती। यह पुरुषों की वकृत मान सकता ही है।

1.4 स्वाभिमानी स्त्री पर शोषण

नारी के प्रति समाज का व्यवहार दोहरे मानदंड का है। नारी-अस्तित्व को बंदीग्रह में कैद कर लया गया है।वैसे तो नारी सहृदयता और कोमल भावनाओं की स्वा मनी रही है। वह परिवार के सुख में अपने सुख निरखने की भाव की प्रधानता रखती है।इस कारण वह अक्सर अपने अस्तित्व और व्यक्तित्व की पहचान कराई है। यह सत्य है क श क्षत नारी ने अपने दास्यत्व एवं पराधीनता के प्रति बगावत की है। पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था में नारी अपनी दोहरी जिम्मेदारियों को खूब सही ढंग से निभाने की क्षमता रखती है। दफ्तर और घर दोनों ओर सजग रहकर,अपने कर्तव्य को पूर्ण करने में वह तत्पर रही है। डॉ. क्षमा शर्मा ने 'परछाई अन्नपूर्णा" की नायिका वभा द्वारा इसे व्यक्त कया है। जैसे- "क्यों है ऐसा,क्यों,वे क्यों समझते हैं मेरी नौकरी का मतलब समझौते करना है सर्फ समझौते। वभा कहती है-

"क्या कोई करता है ऐसा?"

'न भी कहते हो। सारी स्त्रियों के बारे में ऐसा कहते हैं तो मेरे बारे में भी कहते ही होंगे औरतें क्या इस लए है क बिना कसी कारण के लात-घूँसे खाती जाएँ।**1**

यहाँ वभा अपने अस्तित्व के प्रति जागरुक होकर नौकरी केवल समझौता समझ लेने के लए कतई तैयार नहीं है। अपने अस्तित्व को अहम मानकर जीवन के हर पहलू को पूर्णतः जीना चाहिए।

1.5 नारी की अस्मिता का अपमान

डॉ.क्षमा शर्मा के कथा-साहित्य स्त्रीयों पर ही आधारित है। नारी अपनी और अपने परिवार के वास्ते,अपने अस्मिता को बनाये रखने के लए,अनेक शोषणों का शकार बनती है। नारी की अस्मिता,उसकी शक्षा के कारण आ र्थक स्वावलंबन के मार्ग को प्रशस्त करती है। उसकी अस्मिता

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

उसे जातीय परंपरा और इतिहास के व्यापक फलक से भी जोडती है और मानवी संवेदनाओं के प्रति आग्रही बनाती है। नारी मानवी संबंधों की संकीर्णताओं से पृथक होकर,स्वयं को समाज का एक अ वभाज्य अंग समझने लगती है।इस परिवार की संकीर्ण मान सकताओं की जंजीरें उसे बाँध रखती है। वहाँ आत्मनिर्भर की क्षमता का अभाव होने से स्त्री कठपुतली बनकर रह जाती है।

आधुनिक एवं अधुनातन युग में,नारी की स्थिति और भी अस्मिता हीन बनती जारही है। डॉ. क्षमा शर्मा ने 'परछाई अन्नपूर्णा' में नारी पात्र वभा के साथ घटित प्रसंग की प्रखर अ भव्यक्ति दी है। जैसे-" हवा तेज थी,ले खन चटख धूप के कारण ज्यादा महसूस नहीं हो रही थी। उसे याद ही न रहा था क चलते-चलते कब वह फुटपाथ से बीच सडक पर आ गई थी।एक बस बिलकुल उसके पीछे आकर हार्न बजाने लगी थी तब भी उसे सुनाई न दिया था तो ड्रायवर ने क सयाते हुए कहा था- 'अरे कसके ध्यान मे खोई चली जा रही है"।
सहसा उसके मुँह से निकला था-तेरे में"।
'और ड्रायवर ने बात का छौर पकडते हुए तपाक से कहा था-"तो फर वहाँ कहाँ जा रही है,आ बैठ न मेरी बगल में। ड्रायवर के साथा-साथ बस के सरे सवारियाँ हँस रही थी"।1
इससे स्पष्ट होता है क नारी की अस्मिता का अपमान कस प्रकार यह पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था करती रहती है। पुरुष को सदियों से स्त्री की अवहेलना करने की आदत जो पड गई है। वह इसका मान सक रूप से शोषण करता है। इतिहास साक्षी है क हमेशा से ही नारी का कसी-न-कसी तरह शोषण होता रहा है।

1.6 पुरुष वर्चस्ववादी व्यवस्था में नारी शोषण

डॉ.क्षमा शर्मा अपने कथा-साहित्य में नारी के प्रति इस समाज में कतनी आस्था है,उसे स द्ध करती है,जो जीव सृजनकार्य में है और सृजन के उपरांत इस दुनियाँ में आँखे खोलने वाला है,उनकी अस्मिता के प्रति हमारा पुरुष प्रधान समाज कतना सजग है,नारी साक्षात प्रकृती है पर उसके प्रति पुरुष अपना उत्तरदायित्व नहीं जानता। नारी की अस्मिता का प्रश्न पुरुषवादी मान सकता में कहीं मायने नहीं रखता। नारी अपनी अस्मिता को खोजती है। पुरुष वर्चस्वीवादी व्यवस्था में नारी परंपराओं से बाहर निलककर,समान धरातल पर एक स्वतंत्र इकाई के रूप में अपने अस्तित्व की तलाश करती दिखाई देती है।

यह दुनिया जिसे हमारी जरूरत नहीं है,इसमे हम क्यों जिएँ,जिएँ और मरने के लए छोड जाएँ। चील-कौएँ नीच फर भी सहानुभूति उन्हें ही मले।1

वभा एक स्त्री है और स्त्री के प्रति कोई हीन स्तर की बात करें,उसे बर्दाश्त नहीं होता, स्त्री घर हो या दफ्तर हो,नारी-शोषण को अपना अंग मान लेती है एक लडकी ने अपने बॉस की खूब बुराई की तो उसने उसे सलाह दी क ज्यादा बकवास करें तो उसे अपना जूता उतारकर मार दो। परंतु उस स्त्री ने

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

अपनी बात छोडकर वभा की सारी बातें बॉस को बता दी पर क्या हुआ उल्टा ही,बॉस न जाने उसे क्या-क्या कहे जा रहा था वभा एक नारी हेने के नाते,उसे उस स्त्री पर तरस आ रहा था जैसे-"और भी पता नहीं वह क्या-क्या कहते रहे थे,ले कन वभा के कानों में जैसे कार्क लग गई थी। उसका मन तो उस लडकी में खोया हुआ था। उसके बारे में जिस तरह की बातें लोग चटखारे लेकर कहते थे,उससे उसके प्रति वभा की नफरत नहीं सहानुभूति ही उपजती थी।

ले कन कैसी यह लडकी-"शोषण को अपने जीवन अंग बना,उसे ही मूल्य समझने वाली"।

1.7 नारी की मज़बूत इरादे

डॉ. क्षमा शर्मा के कथा-साहित्य में नारी शोषण,अपने मजबूत इरादों के बावजूद भी होता आ रहा है। नारी अपने आप को सद्ध करने के लए मन को मजबूद रखती है, और उसी के अनुरूप चलती रहती है। पर पुरुष प्रधान समाज उसे पग-पग पर शो षत करता जाता है। 'मोबाइल' उपन्यास में डॉ.क्षमा शर्मा ने मधु शुक्ला नायिका द्वारा नारी अस्मिता का प्रतिपादन कया है। प्रेम अत्यंत नाजुक वषय है और पुरुष ऐसे ही वषयों का सहारा लेकर नारी का शोषण करता है। थोडे से अनबन के बाद मधु को गुस्सा आता है और उसकी अस्मिता जाग जाती है। कहती है-"नवीन अगर यह सोचता है क उसकी हर सही गलत बात को मानूँगी,वह जैसे चाहे वैसे बर्ताव करेगा और सहती जाऊँगी तो ऐसा नहीं होगा वह छोडकर जाना चाहे तो जा सकता है।आ खर कसी के साथ कोई भी जबर्दस्ती नहीं की जा सकती।वह जो चाजे सो करे।1

नारी अपनी रक्षा स्वयं करना चाहती है। उसको उतनी हिम्मत एवं ववेक जागरुकता आ गई है। परंतु दूसरे प्रसंग में पुरुष का नरी शोषण अतिवादिता की सीमा लाँघ चुका है। मधु टूट चुकी है। फर भी आत्म वश्वास से भरी मधु, फरसे हिम्मत जुटाती है। कहती है-"भावनाओं के आवेग ने मुझे जहाँ लाकर पटका उसमें ऐसा ही हो सकता था। आ खर कसी लडकी के साथ पहली बात तो ऐसा नहीं हुआ है।

1.8 वासनात्मक पुरुष से शोषण

डॉ.क्षमा शर्मा के उपन्यास में हम पुरुष के वासनात्मक प्रवृत्ती को उनके कहानियों में देखते है।पुरुष आम तौर पर अपना घिनौना दृष्टी स्त्री पर डालता है और अपने आपको सज्जन बोलता है। वही स्त्री का चरित्र हनन करता है और कसूर स्त्री पर डालता है।

"प्रायः स्त्रियाँ चरित्रहीन नहीं होती।उसका चरित्र हनन करने वाले भी प्रायः पुरुष ही होते हैं। फर भी उन्हें स्त्रियों के चरित्रहीन होने पर कोई अफसोस नहीं होता।इससे भी आगे बढकर,जो वे कहते हैं,उससे उनकी स्त्री के प्रति बढती वासनात्मक प्रवृत्ती का ही परिचायक होता है। जैसे " इन लोगों को यह बुरा

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

कतई नहीं लगता क औरतें चरित्र हीन क्यों हो रही है? इन्हें बुरा यह लगता है क अगर वे ऐसी हो रही है तो सब की सब इनकी झो लयों में आकर क्यों नहीं गर रही। 1 यह 'सब की सब इनकी झो लयों में आकर गरना' पुरुष की वासनात्मक दृष्टी को संबो धत करता है।

डॉ.क्षमा शर्मा ने 'मोबाइल' उपन्यास में भी पुरुष की इसी प्रवृत्ती को उजागर कया है। नवीन खन्ना 'टू टाइ मंग बॉय फ्रेंड' का काम करता है।उपन्यास की नायिका मधु के साथ प्रेम लीला कर,उसे गर्भवती अवस्था में छोडकर चला जाता है। -"तुम तो चले गए बिना बताए, फर न कभी फोन,न कोई संपर्क।2 इस तरह का यह नवीन खन्ना रहा है। इससे यही स्पष्ट होता है क नवीन पुरुष है और उस पुरुष की नारी उपभोग की प्रवृत्ती के कारण नवीन ने मधु को एक खलौना समझकर,उसकी भावनाओं के साथ खलवाड कया।इतना ही नहीं तो नवीन मधु के इमोशन्स पर प्ले करके उसे पागल बनाना चाहता है। उसकी दृष्टि से प्यार अलग होता है और शादी अलग।

1.9 मानसिक शोषण

नारी बहुत भावनात्मक जीवी है। वह जल्दी बातों में फँस जाती है। पुरुष नारी के इस गुण का गलत इस्तेमाल,उसे शोषण करने के लए प्रयोग करता है। शोषण यानि अपने फायदा और नारी के नुक्सान 'मोबाईल' उपन्यास में नवीन

एक बार मधु को ऐसे भावनाओं में फसाके,गर्भवती बनाकर,शहर छोडकर चला जाता है।कुछ सालों बाद वापस नवीन मधु को पाना चाहता है और उसको वापस वही रिश्ता मधु के साथ चाहता है। मधु को बार-बार फोन करके मलने के लए मजबूर करता है। मधु भी उसे अपने घर बुलाती है तब भी उसकी यह को शश होती है क मधु उसे फर से अपनाले। "नवीन जो सोचकर आया था,ऐसा नहीं हो सका था। उसे लगा था क वह मधु को उसकी निजी दुनिया से निकालकर अपनी दुनिया में ले जा सकेगा। पुराने दिनों की याद दिलाकर भावुकता की डोर से बाँध सकेगा"। 1 उसकी यह सोच नारी उपभोग प्रवृत्ति का द्योतक ही स्पष्ट होती हैं।

1.10 नारी की दयनीय स्थिति

नारी को समाज के प्रति और अपने परिवार के प्रति अनेक जिम्मेदारियाँ होती है। मर्द उसका साथ दे या न, पर वह अपनी जिम्मेदारियों को कैसे भी करके संभालती है। जब एक नारी वधवा बन जाती है,उसका कोई और सहारा नहीं होता। तो भी अपने जिम्मेदारियों से पीछे नहीं हठती। वह अकेले अनेक शोषण को सहकर अपने परिवार,बच्चों का पालन करती है। इसके लए एक बडा उदाहरण डॉ.क्षमा शर्मा की कहानी 'न्यूड का बच्चा' नायिका वीनू अपने शारीरिक शोषण को सहकर जीवन निभाती है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

वीनू रणवीर से प्रेम करती है। उसी के साथ भाग जाती है,परन्तु पु लस उसका पीछा करती है। 'जॉन' गली में रहता है।उसी के घर वीनू को रखता है। पर रणवीर जल्दी न लौटने से जॉन और वीनू की शादी हो जाती है। जॉन की अचानक मृत्यु से वीनू को अकेलेपन का डर सताता है।वह भय,मान-अपमान,नैतिकता के प्रश्नों से अपने आपको बचाती रही पर आ खर अस्तित्व को बचाये रखने के लए न्यूड फोटोग्राफी के लए तैयार होती है। फर 'जब वह अकेली थी,जीवन संग्राम में जूझ रही थी,तो यह शरीर ही सहारा बना,कौन सच हुआ ईश्वर,नैतिकता के ठेकेदार, मोर्चे खोलने वाले,स्त्रीयों को वेश्या बनाकर.ठगने वाले या यह शरीर? उसका अपना शरीर,जिसने उसे और उसके बच्चे को जिंदा रखा था।**1**

वीनू दुःखों के महासागर में कई बार डुब कयाँ लगा चुकी।दुःख ही उसके जीवन का अनिवार्य अंग बन चुका था। दुःख में ही उसकी अंतश्चेतना जागी और उसी स्थिति में अस्तित्व अंग बन चुका था।

1.11 पती से शोषण

डॉ क्षमा शर्म के कथा -सहित्य में हम देखते है क नारी का शोषण पुरुषों द्वारा ही होता है।पुरुष का व वध रूप जैसे पति,भाई,सहकर्मचारी,दोस्त सबके रूप में भी वे नारी का शोषण करते हैं।"एक उम्र इस तरह" कहानी में गीता नामक लडकी सीधी और अत्यंत सरल स्वभाव की है। उसे कसी बात का शौक नहीं है। शांत स्वभाव की गीता का ववाह हुआ है।

ससुराल जाते वक्त वह बहुत रोई इतना क आजकल कोई लडकी इतना नहीं रोती है,गीता के रोने को लेकर उसके पति ने संदेह प्रगट कर,बार-बार उसे उसके प्रेमी के बारे में पूछताछ कर,उसे सताते रहते है। दूसरी बार गीता जब घर से दूर गई,तो उसने रोना तो क्या अपने मुँह से एक उफ की आवाज तक नहीं निकाली,जिस पर भी पति ने आक्षेप लया क प्रेमी से खूब मलकर आयी हो। उसके बाद जब वह मायके आयी तो वापस लेने कोई आया ही नहीं।

1.12 दैहिक शोषण

डॉ.क्षमा शर्मा के कथा-साहित्य में अनेक शोषण के बारे में बताया गया है।नारी पर अनेक बार दैहिक शोषण होता आया है। 'समाप्त पीढी'नामक कथा में माँ के बारे में बताया है क पता अपनी माँ के कहने पर पत्नी की (यानी बच्चों की माँ) को कस प्रकार पीटते थे।बेचारी माँ कस प्रकार अन्याय,अत्याचार सहकर,सहमी हुई चुपचाप बैठती थी।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

1.13 पिता का शोषण

आज के समाज में पैसा ही सब कुछ है। वह पैसों के लए और अपनी वासना की तृप्ति के लए इनसानियत के सभी सोपानों को त्यागकर, सीधे हैवानियत पर उतर आया है। कामुक भूख के पीछे अपने पता-पुत्री,भाई-बहन,माता-पुत्र सभी रिश्तों को अपने जीवन से मटाता चला जा रहा है।

अगर जन्मदाता ही अपनी पुत्री का भक्षक बनने लगे तो उस स्त्री की स्थिति की अति भयंकरता को समझ नहीं सकते। उसे यह सब कुछ कब तक सहना है? डॉ.क्षमा शर्मा 'स्त्री को चाहिए एक सुर क्षत घर' कथा में लखती है- "जब क सच्चाई यह है क बच्ची जो अपने पता द्वारा ही सताई जाती है अक्सर अपना मूँह ही नहीं खोल पाती,क्यों क यदि पता पर ऐसा आरोप लगायेगी, तो घर में कैसी रहेगी? कई ऐसी घटनाएँ भी प्रकाश में आई है क माँ ने अपनी बेटी को पता के साथ संबंध बनाने पर मजबूर कया क्यों क उसे डर था क यदि वह ऐसा नहीं करेगी तो पति उसे छोड देगा। पु लस अ धकारियों का कहना है क ऐसी घतनाएँ समाजिक दबाव के कारण ही प्रकाश में कम आ पाती है,बल्कि लड कयाँ बहुत मजबूरी में ही पु लस के पास पहुँचती है।एक लडकी को सात वर्ष की उम्र से उसका पता सता रहा था। बच्ची की माँ मर चुकी थी। जब वह चौदह वर्ष की हुई और चीज़ों को ठीक-ठीक समझने लगी,तो घर से भाग गई। जब पु लस ने पकडा,तो सारी बात सामने आई"।1

ऐ स घटनाओं में उत्पी डत लड कयाँ ही चाहती है क उनका भाई, पता या रिश्तेदारों द्वारा होनेवाला उनका यौन-उत्पीडन बंद होना चाहिए,मगर उन पर कठोर कारवाई न हो। लड कयाँ यह कल्पना भी नहीं कर सकती क जिन्होंने उन्हें जन्म दिया,जिस घर में पली-बढी हुई,वही लोग उन्हें निगलने के लए आतुर बैठे हैं। अतएव अति यथार्थ अत्यंत कडवा होता है। इस दृष्टि से नारी के प्रति वकृत मान सकता से हमे ग्लानि होती है।यह सत्पुरुष होने का द्योतक है। सत्पुरुष का आशय मानव होने से ही है।

1.14 औरत ही औरत की दुश्मन

डॉ क्षमा शर्मा के कथा-साहित्य में नारी अपने आपको सर्वश्रेष्ठ साबित करने के चक्कर में दूसरी नारी को सताती है। दब्बू बनाती है।क्षमा जी लखती हैं-" दुनिया की हर माँ अपने को सर्व श्रेष्ठ घो षत करने के चक्कर में अपनी लड कयों को खूब दबाती है। उन्हें खूब सताती है। आ खर औरत ही औरत की दुश्मन होती है न! क्या एक औरत ही दूसरी औरत को अच्छे सबक सखा सकती है।बस उसने कुछ नहीं सोचा। उसने ठान लया था क वह मरेगी और दुनियावालों के साथ-साथ अपनी माँ को सबक सखाएगी"।1 से,स्पर्धात्मक होड़ में लगी रहती है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

1.15 निष्कर्ष

नर और नारी प्रकृति के आधार स्तंभ है,वे एक दूसरे के पूरक है।इतिहास साक्षी है क नारी की यशोगाथाओं,शौर्यता के साथ उसके शोषण का भी इतिहास प्रस्तुत हुआ है।प्राचीन काल से नारी का कसी न कसी रूप में शोषण होता आरहा है।देशकाल की मान्यतायें नारी को 'महानता' तो देती रही पर 'समानता' नहीं।आज भी सं वधान,कानून,वैझ्नानिक,अर्थ-तंत्र,आधुनिक एवं अधुनातन वैचारिकता के बावजूद नारी शोषण की लंबी यात्रा निरंतर बढती ही जा रही है,अपने नये-नये रूपों को उजागर कर रही है।नारी-शोषण का स्वरूप केवल बदल रहा है,शोषण बंद नहीं हुआ।आज के युग में जहाँ नारी,बंद कमरे से बाहर निकली और कार्यालयों,दफ्तरों में कार्य करने लगी,वहाँ उसे अपने कुशलता,कार्य क्षमता एवं प्रतिभा के साथ दायित्व का आनंद प्राप्त हुआ।परंतु उसमें पुरुष को मान सकता रोडे अटकाने लगी है।वह पुरुषों की घृ णत दृष्टि की शकार बनने लगी है। मान सक शोषण के साथ शरीर शोषण आम बात होने लगी यदि नारी अपने कार्य में दक्ष रहकर,कुशलता एवं प्रतिभा से प्रशंसा की अ धकारिणी बने तो भी पुरुष का ईर्ष्या भाव जागता है। पुरुष उस नारी सहयोगी के चरित्र को आरो पत कर, उसकी मान सकता को खं डत करते हैं। क्या कामकाजी महिलाओं की यह स्थिति उसे निराश न कर और अ धक दक्ष रहकर,अपने व्यक्तित्व को वस्तृत करें या अपनी कुशलता पर अंकुश लगायें? नारी दु वधा जन्य स्थितियों का सामना कर रही है।

पुरुष को चाहिए क नारी के लए उन्नति के अवसर एवं साधन जुटायें।नारी को प्रेरित करें क वह भी एक मानव की तरह अपना जीवन जी सकती है।वह स्वयं तय करें क कस प्रकार से उसे जीना है? यह भी संभव है जब नारी को गर्भ से ही सम्मान की दृष्टि से देखा जाये। जन्म होते ही उसका पालन-पोषण उ चत तरीके से कया जाये ता क वह मान सक एवं शारीरिक दृष्टि से पूरी तरह जीवन के प्रांगण में वहार करें और अपने नारी जीवन में नारीत्व की गरिमा से संपन्न समृद्ध हो सके। प्रकृति ने उसे जिस रूप में सृजित कया,उसी रूप में वह उन्नत होती रहे। यही तो सच्ची मानवता है।

डॉ. क्षमा शर्मा की कहानियाँ नारी- चंतन की समृद्धता,नारी-समस्या और समाधानों के साथ उजागर हुई है। डॉ.क्षमा शर्मा की कहानी में प्रायः यह प्रतीत होता है क वह यशपाल की तरह वचार के वस्तार पर यकीन करती है-जैसे 'संदर्भहीन सरीखी' कहानी बताती है क कतनी ही चीजें हमारे आसपास ऐसी होती है,जो संदर्भहीन होते हुए भी परस्पर जुडती चली जाती है। डॉ.क्षमा शर्मा की कहानियों की इस वशेषता के साथ उनके वचार को महत्वपूर्ण माना गया है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

संदर्भ ग्रंथ

क्रम सं	पुस्तक का नाम	लेखक	प्रकाशन	साल
1	मोबाइल	क्षमा शर्मा	राजकमल प्रकाशन	2004
2	परछाई अन्नपूर्णा	क्षमा शर्मा	राज्यसूर्य प्रकाशन	1996
3	काला कानून	क्षमा शर्मा	देवदार प्रकाशन	1982
4	कस्बे की लड़की	क्षमा शर्मा	राजधानी प्रकाशन	1989
5	थैंक यू सद्दाम हुसैन	क्षमा शर्मा	भारतीय प्रकाशन	**1997**
6	रास्ता छोड़ो डा लंग	क्षमा शर्मा	वाणी प्रकाशन	**2008**
7	**21**वीं सदी का लड़का	क्षमा शर्मा	सामयिक प्रकाशन	1999